पाठ्य सामग्री 15-04-2021 4

स्नातक प्रतिष्ठा, खण्ड - प्रथम, विषय - मैथिली पत्र - प्रथम
प्राध्यापक - प्रवीण कुमार 'प्रभंजन' (सम्प्राग) मैथिली विभाग
उदयनाचार्य रो सड़ा कॉलेज रो सड़ा (समस्तीपुर)

पाठ्यांश - 'कृष्णजन्म' महाकाव्यक वैशिष्ट्य'

'कृष्णजन्म' महाकाव्य कविवर मनबोध प्रणीत मैथिली साहित्यक प्रथम प्रबन्धकाव्य अछि। महाकाव्यक काव्यशास्त्री लक्षणक परंपरानुकूल पूर्णतः नहि रहितहुँ अभिनव विषय वस्तुक सरल बोधगम्य भावानुरूप गुण अवश्य भेटैत अछि। डॉ० जयकान्त मिश्र आ आचार्य रमानाथ झा एहि महाकाव्य के महाकाव्यक संज्ञा देलनि ओतहि आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन' पौराणिक कथा काव्य कहि संबोधित करलनि अछि।

महाकाव्यक कथानक ऐतिहासिकतानुरूपक क्रम मे एहि महाकाव्यक कथा हरिवंश पुराण आ भागवत पुराणक पृष्ठभूमि आधारित अछि। सम्पूर्ण महाकाव्य अठारह अध्याय मे विभक्त अछि। कथानायक उच्चकुलीनव धीरोदात्त गुण निपुण स्वयं भगवान श्रीकृष्ण जे सोलह कला कौशल सम्पन्न विराट व्यक्तित्वक आ नायिका वात्सल्य शीला मूर्ति यशोदा माताक रूप अछि। महाकाव्य आरंभ मंगलाचरण सँ भेल अछि। प्राकृतिक वर्णन प्रसंगानुकूल भेल अछि। रसक निर्वहन करैत भक्ति आ वात्सल्य भावक प्रवाह स्थापित करल गेल अछि। पूर्व मैथिली साहित्यिक रचना मे पूर्ण शृंगारिक तत्त्व कें परिवर्तित रूप प्रस्तुतीकरण रूप एहि महाकाव्य मे भेल अछि। अलौकिकता कें सहज सरलीकरण रूपक अनुभूति कराओल गेल अछि। कथाक महत्त्व धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष प्रयोजनानुकूल बाललीलाक स्वाभाविक दर्शन भेल अछि। श्रीकृष्ण भगवानक कौतूहल कार्य सँ ग्राम्य जनजीवनक मन मे उत्साहपूर्ण भाव जागृत होइत अछि। भक्तिक संग शक्तिक प्रदर्शन आ सत्य सत्ताक अनुभूति सहज रूप मे वर्णन भेल अछि। अधर्मक अन्त आ धर्म स्थापनाक लेल पृथ्वी पर भगवानक अवतार होइत अछि। पृथ्वी पर पूतना, कालियदमन व कंस वधक लेल भगवान श्रीकृष्ण जन्म लैत छथि आ अन्यान्य भय मुक्त करबाक लेल गोवर्धनलीला, यमलार्जुन उद्धार, कुवलय-पीड़ हरण करैत छथि। उद्देश्य अनुरूप 'कृष्णजन्म' ग्रंथक नामकरण सार्थक सिद्ध होइत अछि। मंगलाचरण पद द्रष्टव्य -

"प्रणमो गिरिवर - कुमारि - चरन
जे बल कविसभ त्रिभुवन बरन
तैं कर पुन पुन मंगल करिअ
हरिपद कमल हृदय धरिअ ॥"